नागौरी

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana
लेखक: Major F. S. H. Baldrey
प्रकाशन वर्ष: 1911

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

नागौरी गोवंश

मूल स्रोत: मेजर एफ. एस. एच. बाल्ड्रे, राजपूताना के स्वदेशी गोवंश, 1911

रिपोर्ट की पृष्ठभूमि

रिपोर्ट की प्रस्तावना के अनुसार यह जानकारी कैप्टन एफ. एस. एच. बाल्ड्रे ने 1905 में संकलित की थी। इसे पूर्ण या सर्वांगपूर्ण रिपोर्ट नहीं कहा गया, लेकिन प्रस्तावना में उपलब्ध जानकारी को उपयोगी और जहाँ तक जाती है, सटीक बताया गया है। पुस्तक के छायाचित्र भी बाल्ड्रे ने उन्हीं स्थानों पर लिए जहाँ संबंधित नस्लें स्थानीय थीं।

स्रोत-संदर्भ: प्रस्तावना | पीडीएफ पृ. 3.

राजपूताना के पाँच गोवंश-वर्गों में नागौरी का स्थान

बाल्ड्रे राजपूताना के गोवंश को 5 वर्गों में बाँटता है: नागौरी तथा मेरवार, राठ, मेवाती, बेगरी और रिंडा। नागौरी बैलों को वह भारत में मिलने वाले सर्वोत्तम कामकाजी बैलों में रखता है—बड़े, शक्तिशाली और सक्रिय, तथा अपने मूल क्षेत्र की गहरी रेतीली भूमि में भारी खिंचाव करने में सक्षम। रिपोर्ट में राठ और मेवाती को नागौरी से संबंधित, पर अलग पूर्वी प्रकार बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 1 | पीडीएफ पृ. 7.

राजपूताना का पशुपालन-पर्यावरण और नागौर के पशुपालक

रिपोर्ट राजपूताना को उत्कृष्ट गोवंश-प्रजनन क्षेत्र मानती है। रेतीली भूमि, पानी की कमी और सीमित खेती के कारण बड़े क्षेत्र चराई के लिए खुले रहते थे। घास ऊपर से कम और चारा विरल दिखाई देता था, फिर भी लेखक गाँवों के आसपास पशुओं को अच्छी दशा में देखता है।

जोधपुर और दक्षिणी बीकानेर में पशुपालन आजीविका का महत्वपूर्ण साधन था। अच्छे मौसम में पशुपालक अपने गाँवों में रहते, पर अभाव आने पर झुंडों को धीरे-धीरे दूसरे क्षेत्रों की ओर ले जाते। नागौर के लोग सामान्यतः दक्षिण और पश्चिम की ओर मालवा, महू के आसपास, उत्तरी गुजरात और सिंध तक जाते थे। ऐसे घूमंतू पशुपालकों को रिपोर्ट में बंजारे कहा गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 2 | पीडीएफ पृ. 8.

नस्लों के मिश्रण और अकाल का प्रभाव

बाल्ड्रे लिखता है कि राजपूताना की कई नस्लें आसपास की नस्लों से मिश्रण के कारण पहले की तुलना में खराब और कम शुद्ध हो गई थीं। वह अलग नस्ल को सुधारने के लिए दूसरी दूरस्थ नस्ल का सांड लाने की बजाय उसी नस्ल के चयनित सांडों के उपयोग का समर्थन करता है।

बालोतरा और बाड़मेर, जिन्हें वह नागौरी गोवंश के प्रमुख प्रजनन के प्रमुख केंद्र कहता है, लगातार अकालों से गंभीर रूप से प्रभावित हुए। एक खराब दौर में केवल लगभग 5–10% पशु बचे। 1901 में इन क्षेत्रों के सभी प्रजनन-सांड मर गए और सिंध से संकर पशु लाने पड़े। लेखक को आशंका थी कि इससे नागौरी झुंडों में मिश्रण फैलेगा; कुछ शुद्ध नागौरी बछड़े बचे, जिन्हें दाग-चिह्न लगाकर प्रजनन के लिए छोड़ा गया।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 2–6 | पीडीएफ पृ. 8–12.

मूल क्षेत्र: नागौर, बाड़मेर और बालोतरा

नागौर का क्षेत्र जोधपुर के उत्तर और पश्चिम तथा बीकानेर की दिशा में स्थित बताया गया है। शुद्ध नागौरी पशु वास्तव में बहुत सीमित क्षेत्र में पाले जाते थे—नागौर के लगभग 15–20 मील के दायरे में और जोधपुर के एक छोटे क्षेत्र में, बाड़मेर और बालोतरा के आसपास तथा उनके बीच।

लेखक विशेष रूप से कहता है कि वास्तविक प्रजनन मुख्यतः बाड़मेर–बालोतरा क्षेत्र में होती थी। वहाँ पैदा हुए बछड़े बालोतरा और बाड़मेर के मेले में लाए जाते, नागौर के लोग उन्हें खरीदकर नागौर ले जाते और वहाँ पालते थे। इसी पालन-पोषण के बाद वे नागौरी नाम से प्रसिद्ध कामकाजी पशु बनते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 6 | पीडीएफ पृ. 12.

नागौरी गाय
(NAGAURI COW)

सोत: Major F. S. H. Baldrey, Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana, 1911

(Plate II)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

छायाचित्र: जोधपुर में लिया गया।

नागौर गाय (Nagore Cow)

स्रोत: Major F. S. H. Baldrey, Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana, 1911

(Plate III)

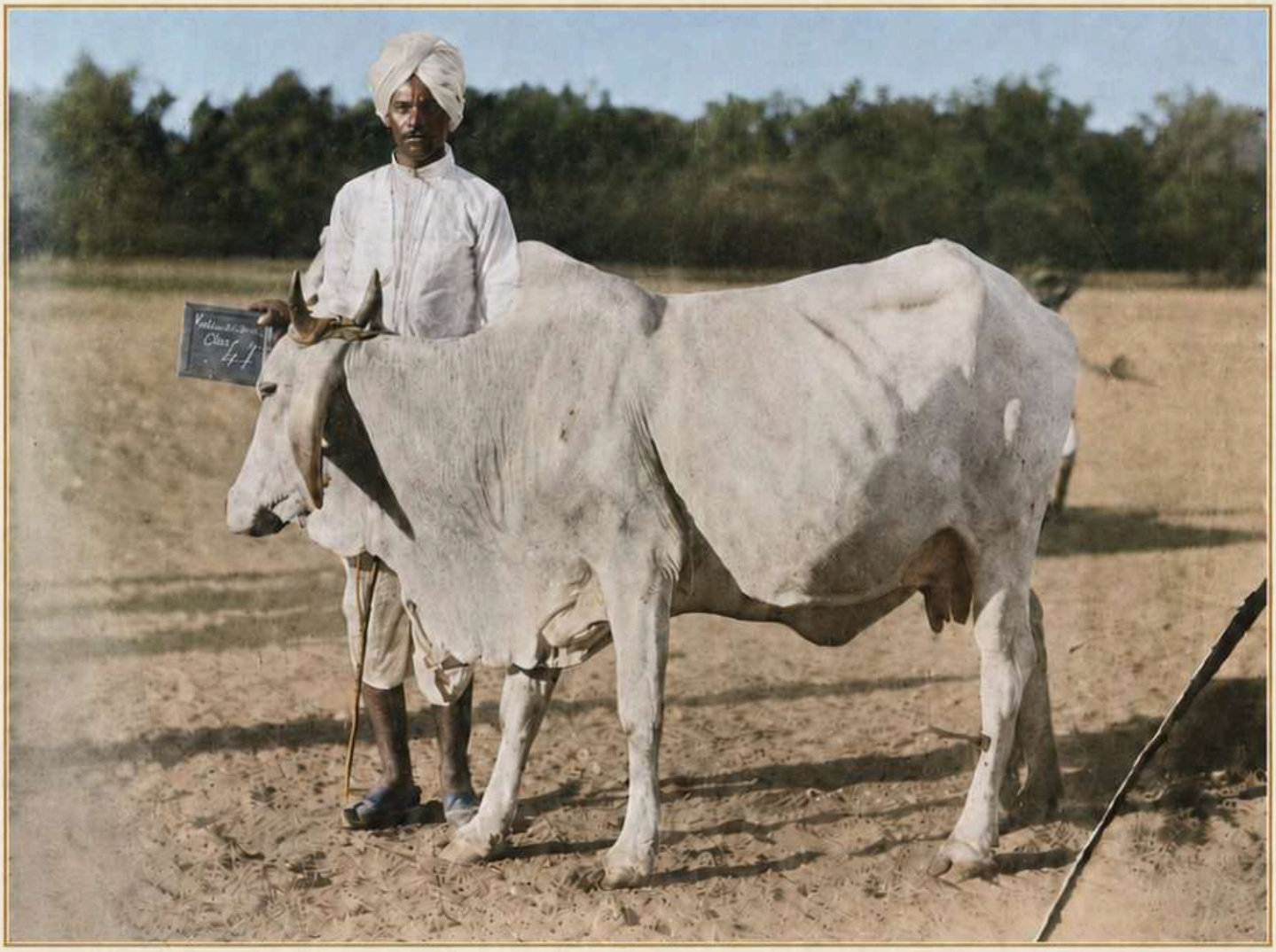

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

छायाचित्र: जोधपुर में लिया गया।

भूमि, चराई और पानी

नागौर का देश अलवर से अधिक रेतीला बताया गया है। नागौर से लगभग 10 मील दक्षिण और पूर्व की ओर 'सोहालिक' अथवा 'काला क्षेत्र' नामक क्षेत्र का उल्लेख है जहाँ मिट्टी अधिक गहरी, मिट्टी-मिश्रित, भारी और उपजाऊ थी; वहाँ फसलें बेहतर और चराई अधिक थी।
अकृषित भूमि पर छोटी, महीन और पौष्टिक घास उगती थी जिसे विशेष रूप से पशुओं के लिए बचाकर रखा जाता था। पानी मुख्यतः वर्षा पर निर्भर तालाबों से मिलता था। अभाव में कुओं का सहारा लिया जाता, लेकिन वे प्रायः खारे और बहुत गहरे होते थे।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 6–7 | पीडीएफ पृ. 12, 15.

चराई और कामकाजी पशुओं का आहार

गायों और प्रजनन-सांड को सामान्यतः चराई के अतिरिक्त बहुत कम दिया जाता था। कामकाजी बैलों और अभाव के समय गायों को बंधा हुआ आहार किया जाता था। वर्षा ऋतु में गायें चरती थीं और घास, बाजरी आदि को जमा कर सर्दी और गर्मी के लिए रखा जाता था।
तांगा अथवा किसी देशी रियासत के परिवहन कार्य में रखे नागौरी बैल के लिए रिपोर्ट यह राशन देती है: चना 2½ सेर, गुड़ ½ सेर, जौ का आटा ½ सेर और चरी अथवा घास 10 सेर। बनिए कुछ मात्रा में घी भी देते थे।
खेती, गाड़ी आदि के काम में जमींदार अपने बैल को ज्वार और बाजरा लगभग 2–2 सेर प्रतिदिन तथा करबी अथवा घास इच्छानुसार देता था, जिसकी मात्रा लगभग 20 सेर प्रतिदिन बताई गई है। इसके साथ लगभग ¾ सेर तिल का तेल खोखले बाँस की सहायता से पिलाने वाले औषधीय आहार के रूप में दिया जाता था।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 7 | पीडीएफ पृ. 15.

पशु-बाजार

नागौर में स्वयं कोई पशु-बाजार नहीं था। बालोतरा में, नागौर से लगभग 60 मील दूर, वार्षिक बाजार लगता था। पशु पुष्कर, हिसार और हांसी भी ले जाए जाते थे।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 7 | पीडीएफ पृ. 15.

एक अच्छी नागौरी गाय का वर्णन

रिपोर्ट में बाड़मेर क्षेत्र की एक अच्छी नागौरी गाय का अलग वर्णन है। चेहरा सीधा, नाक की हड्डी कुछ नुकीली, थूथन महीन और आँख खुली हुई बताई गई है। नेत्र-कक्ष की अस्थि-उभार पर बहुत हल्का उभार है। सींग सिर पर पीछे की ओर स्थित हैं और नागौरी बैलों जैसी वक्रता रखते हैं। कान बड़े और लटकते हुए हैं। गलकम्बल न होने के कारण गर्दन लंबी दिखाई देती है। पसलियाँ गोल, पिछला भाग चौड़े, सीधे और विकसित हैं। पूँछ लंबी, चाबुक जैसी और अंत में काले बालों का गुच्छा है। अग्रभुज और जाँघें विकसित, खुर छोटे और सघन, पैर सीधे तथा पिछले जोड़ चौड़े और शक्तिशाली हैं। लिंगावरण अल्पविकसित, दुग्ध-शिरा विकसित और थन जाँघों के बीच ऊपर तक फैला हुआ बताया गया है। कुकुद केवल थोड़ा विकसित है। इस गाय के माप नहीं लिए गए थे।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 7 | पीडीएफ पृ. 15.

नागौरी बैलों का शारीरिक स्वरूप

सामान्यतः नागौरी पशु सुघड़, बड़े, ऊँचे खड़े होने वाले, सक्रिय और शांत स्वभाव के बताए गए हैं। रंग सामान्यतः सफेद या धूसर है। परिवहन और तोपखाना कार्य के लिए उपयुक्त, तेज चाल वाले और अच्छी तेज दुलकी चाल के कारण पूरे राजपूताना में उनकी मांग थी।
चेहरा लंबा और संकरा है। हरियाना की तरह माथे पर स्पष्ट उभार नहीं है। पलकें कुछ भारी और झुकी हुई; आँखें छोटी, साफ और चमकीली; थूथन स्पष्ट तथा चौकोर है।
सींग सामान्यतः बड़े और विकसित हैं—बाहर की ओर, ऊपर, भीतर और प्रायः पीछे की ओर मुड़ते हैं। गर्दन छोटी और महीन, गलकम्बल छोटा और कुकुद बहुत विकसित है; कई पशुओं में कुकुद आगे की ओर लटकता हुआ दिखाई देता है। नस्ल की खासियत यह है कि कुकुद कंधों का ऊपरी भाग पर बहुत आगे स्थित है। इससे गर्दन का ऊपरी भाग बहुत छोटा दिखता है, सिर का ऊपरी पिछला भाग पीछे खिंचा हुआ लगता है और चेहरा कुछ आगे निकला दिखाई देता है। कंधे गहरे और अच्छे ढलाव वाले, अग्रभुज शक्तिशाली, पिंडली की हड्डी छोटा और खुर अपेक्षाकृत छोटे तथा पास-पास हैं। कभी-कभी घुटने के आगे झुकाव और बाहर मुड़े खुरों के अग्रभाग की प्रवृत्ति मिलती है, लेकिन अच्छे पशुओं में पैर बिल्कुल सीधे होते हैं। छाती का घेरा गहरा, पसलियाँ गोल, पिछला भाग लंबे और सीधे तथा पूँछ अच्छी तरह लगी हुई है। पिछली जाँघें शक्तिशाली और पिछले जोड़ सीधे तथा विकसित हैं। लिंगावरण छोटा है। पूँछ लंबी, पतली, चाबुक जैसी, पिछले जोड़ से थोड़ा नीचे तक और अंत में महीन काले बालों का गुच्छा रहता है। कान लंबे, लटकते हुए और सिरे पर कुंद हैं।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 8–9 | पीडीएफ पृ. 16, 18.

हड्डी की हल्कापन, सक्रियता और खिंचाव

रिपोर्ट नागौरी में अपेक्षाकृत लंबे पैरों और हल्की हड्डी की प्रवृत्ति दर्ज करती है। लेखक मानता है कि भारी रेत में यह हल्कापन उनकी सक्रियता बढ़ाता है, किंतु परिवहन और तोपखाना कार्य के कुछ अधिकारियों को भारी और अधिक शांत मेवात तथा निमाड़ प्रकार पसंद आते थे।

एक जोड़ी नागौरी बैल के बारे में कहा गया है कि वे लगभग 6–9 मन (लगभग 224–336 किलोग्राम, तत्कालीन ब्रिटिश-भारतीय मानक के आधार पर) भार वाली गाड़ी खींचते हुए 15 घंटे में 40 मील (लगभग 64.4 किमी) आसानी से कर सकते थे। लेखक कुकुद की बहुत आगे की स्थिति को खींचने की शक्ति से जोड़ता है: इससे जुआ गुरुत्व-केंद्र के आगे अच्छी तरह बैठता है और पशु अपने शरीर का वजन तथा कमर और पिछले भाग की शक्ति काम में लगा सकता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 8 | पीडीएफ पृ. 16.

गाय, सांड और पशुपालक की पसंद

गायें बैलों से बहुत मिलती-जुलती हैं, पर आकार में छोटी और सींग हमेशा छोटे होते हैं। गलकम्बल छोटा, अल्पविकसित लिंगावरण स्पष्ट और थन विकसित तथा थनाग्र बड़े और उभरे हुए हैं। गायें सामान्यतः मध्यम दूध देने वाली हैं; दुग्ध-उद्देश्य के लिए भरपूर आहार पर दूध 10 सेर प्रतिदिन तक पहुँच सकता है। रंग सफेद या धूसर है।

सांड में गर्दन पर्याप्त लंबी, कुकुद बड़ा और विकसित, सींग मोटे, अच्छी वक्रता वाले पर बहुत लंबे नहीं होने चाहिए। लिंगावरण छोटा और सिरे पर नुकीला, गलकम्बल अपेक्षाकृत छोटा, पूँछ पतली और पिछले जोड़ से थोड़ा नीचे तक होनी चाहिए। हड्डी का घेरा बहुत बड़ा होना जरूरी नहीं, लेकिन वह कठोर और मजबूत दिखनी चाहिए; पिछला भाग सीधा हों। स्थानीय लोग लंबे, संकरे, घोड़े-जैसे चेहरे को बहुत महत्व देते थे।

पशुपालक गाय पर सांड जितना ध्यान नहीं देते थे, फिर भी बड़ी और अच्छी नस्ल की गाय को छोटी अच्छी गाय से अधिक पसंद करते थे। सांड और गाय में भारी हड्डीदार पैर पसंद नहीं किए जाते; छोटे हड्डी और सक्रियता को प्राथमिकता दी जाती थी, जबकि कामकाजी बैल में बड़ी हड्डी को महत्व मिलता था। दोनों माता-पिता का शुद्ध नस्लीय होना आवश्यक माना जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 9 | पीडीएफ पृ. 18.

बछड़ों की खरीद और नागौर में पालन

बाड़मेर और बालोतरा के प्रजनन-क्षेत्र में बेहतर वर्ग के सांड और गायें मिलती थीं। वहीं पैदा हुए युवा बछड़े बालोतरा मेला में आते और नागौर के घूमंतू पशुपालक उन्हें खरीदते। अभाव अथवा अकाल की स्थिति के अनुसार वे उन्हें नागौर या दूसरे क्षेत्रों में पालते थे।

नागौर में भी कुछ प्रजनन होती थी और लोग अपनी नस्ल को बनाए रखने का ध्यान रखते थे। कर्नल पाउलेट ने नागौर और मारवाड़ पशुओं को अलग मानने की कोशिश की, पर बाल्ड्रे स्पष्ट रूप से लिखता है कि वह दोनों को एक ही नस्ल मानता है। उसके अनुसार दोनों क्षेत्रों में पीठ, कमर और पिछला भाग का नीचे की ओर ढलाव समान है और यह नागौरी नस्ल की विशेषता है; उसके विचार में यह दिखावट बड़े और आगे स्थित कुकुद के कारण भी हो सकती है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 9–10 | पीडीएफ पृ. 18–19.

काम शुरू करने की आयु, गति और लेखक का व्यक्तिगत अनुभव

नागौर के पालक 2–3 वर्ष के पशु खरीदकर उन्हें तुरंत हल्के काम में लगाते और बिक्री के लिए तैयार करते थे। छोटे पशुओं को बड़े पशुओं के साथ चरने के लिए छोड़ दिया जाता था। भारी काम सामान्यतः लगभग 4 वर्ष की आयु से शुरू होता था।

काम में ये बैल हल, गाड़ी और कुएँ पर लगाए जाते थे। राजपूताना के देशी रियासतों के धनी व्यापारी अच्छे तेज दुलकी चाल वाले बैल को अपनी हल्की दो-पहिया 'मझोलियाँ' खींचने के लिए रखते थे। वे तेज तेज दुलकी चाल कर सकते थे और कई घंटों तक चलते रह सकते थे।

बाल्ड्रे अपना प्रत्यक्ष अनुभव दर्ज करता है: उसने रेतीली सड़क पर एक जोड़ी नागौरी बैलों से वास्तविक यात्रा-समय में 8 घंटे में 40 मील—20 मील जाना और 20 मील लौटना—तय किए, बीच में 3 घंटे का विश्राम था। वह लिखता है कि काफी भारी कच्ची रेतीली सड़क पर 11 घंटे में 40 मील भी एक जोड़ी के लिए बहुत अच्छा प्रदर्शन है। जोधपुर और बीकानेर के बनिया लोग इन बैलों की दौड़ें कराते थे और कुछ जोड़े ₹600–₹800 तक बिकते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10 | पीडीएफ पृ. 19.

नागौर बैल (Nagore Bullock)

मूल स्रोत: Major F. S. H. Baldrey, Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana, 1911

(Plate V)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

छायाचित्र: अलवर में लिया गया।

नागौर बैल (Nagore Bullocks)

मूल स्रोत: Major F. S. H. Baldrey, Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana, 1911

(Plate VI)

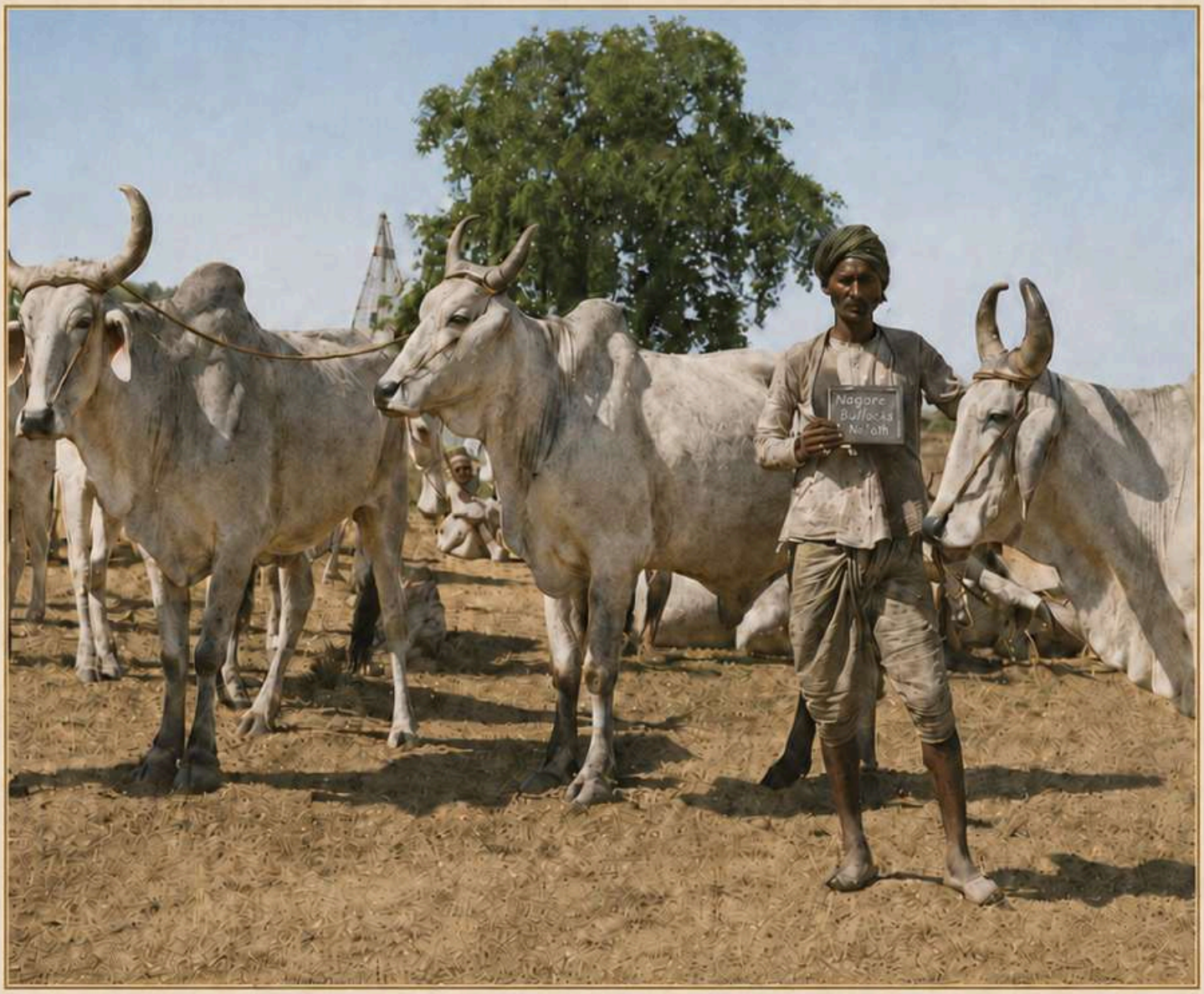

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

छायाचित्र: नागौर के निकट लिया गया।

दूध

नागौर में दुग्ध-पालन विशेष व्यवसाय नहीं था और गोवंश को केवल दूध-उत्पादन के लिए नस्ल नहीं किया जाता था। इसलिए साधारण नागौरी गाय की सामान्य दूध-उत्पादन लगभग 6 सेर प्रतिदिन बताई गई है। अलवर में दुग्ध-उद्देश्य के लिए रखी और अच्छी तरह खिलाई गायों में बाल्ड्रे ने 10 सेर प्रतिदिन तक दूध-उत्पादन देखी। दूध देने की अवधि राठ गायें के समान बताई गई है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10 | पीडीएफ पृ. 19.

गाँव की प्रजनन-सांड व्यवस्था

प्रजनन-सांड का चयन गाँव वाले स्वयं करते थे। अनुपात लगभग 1 सांड प्रति 100 गायें रखा जाता था, हालांकि पशुपालक 1 सांड प्रति 80 गायें को बेहतर मानते थे। सांड सामान्यतः बाड़मेर और बालोतरा से लिए जाते थे।

कभी कोई धनी भूमि-मालिक कीमत देता और गाँववाले की समिति सांड चुनती; कभी गाँव वाले सामूहिक चंदा से सांड खरीदते। सांड गायों के साथ खुला चरता और रहता था तथा उसका खर्च सार्वजनिक रूप से उठाया जाता था।

मुख्य नागौर और बाड़मेर क्षेत्रों में 'दोगला' अर्थात संकर पशु को गाँव के झुंड में प्रवेश नहीं दिया जाता था। झुंड लगभग सुबह 8 बजे निकलता, दिनभर लड़कों की निगरानी में चरता और सूर्यास्त पर गाँव में वापस बाड़े में रखा जाता। अभाव में कुछ बंधा हुआ आहार दिया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10–11 | पीडीएफ पृ. 19–20.

गर्भित गाय, बछड़े और बछियों की देखभाल

ब्याने वाली गाय को कभी-कभी अतिरिक्त आहार, तिल का तेल (तिल) और खल दिया जाता था; यदि वह मजबूत न हो तो दूसरे पशुओं के चरने जाने पर उसे गाँव में रखा जाता। बाल्ड्रे लिखता है कि ब्याने की जटिलताएँ बहुत कम होती थीं और अक्सर जन्म बिना विशेष ध्यान के हो जाता था। जन्म के समय बछड़े को गाय का पूरा दूध मिलता था। यदि बछिया हो तो उसका हिस्सा जल्दी घटाकर आधा कर दिया जाता और लगभग 4 महीने में जितनी जल्दी संभव हो, उसे दूध छुड़ा दिया जाता था। बचा हुआ दूध घी बनाने और पीने में उपयोग होता था।

बछड़ों को गाय से दूध पीने से रोकने के लिए रात और दिन के कुछ समय गाँव में अलग बाड़े में रखा जाता या थूथन लगाया जाता था। बछियों से सामान्यतः 4 वर्ष की आयु तक प्रजनन नहीं कराई जाती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11 | पीडीएफ पृ. 20.

बधियाकरण

नागौर में बधियाकरण भारत के कई दूसरे क्षेत्रों से अलग तरीके से की जाती थी। यह चीरा लगाकर चाकू से की जाने वाली पद्धति से 6–8 महीने की आयु में, सामान्यतः अप्रैल–मई में की जाती थी, क्योंकि उस समय घाव जल्दी भरने माने जाते थे। कोई बाद की चिकित्सा नहीं किया जाता था और जटिलताएँ दुर्लभ बताई गई हैं; बाल्ड्रे इसे अत्यधिक शुष्क जलवायु से जोड़ता है।

पशुपालक स्वयं यह क्रिया नहीं करते थे क्योंकि जातिगत संकोच इसके विरुद्ध था; गाँव के चमार यह काम करते थे और कभी बछड़े को कुछ दूरी तक भेजना पड़ता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11–12 | पीडीएफ पृ. 20–21.

1911 में दर्ज कीमतें

श्रेणी	दर्ज कीमत
तेज तेज दुलकी चाल वाले बैलों की जोड़ी	₹300–₹600
साधारण हल-बैलों की जोड़ी	₹200–₹300
अच्छी गाय	₹30–₹80
असाधारण अच्छी गाय	₹100 तक
4 वर्ष का प्रजनन-कार्य योग्य प्रजनन-सांड	₹80–₹100

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 12 | पीडीएफ पृ. 21.

नागौर दौड़ के बैल (Nagore Racing Bullocks)

मूल स्रोत: Major F. S. H. Baldrey, Indigenous Breeds of Cattle in Rajputana, 1911

(Plate VII)

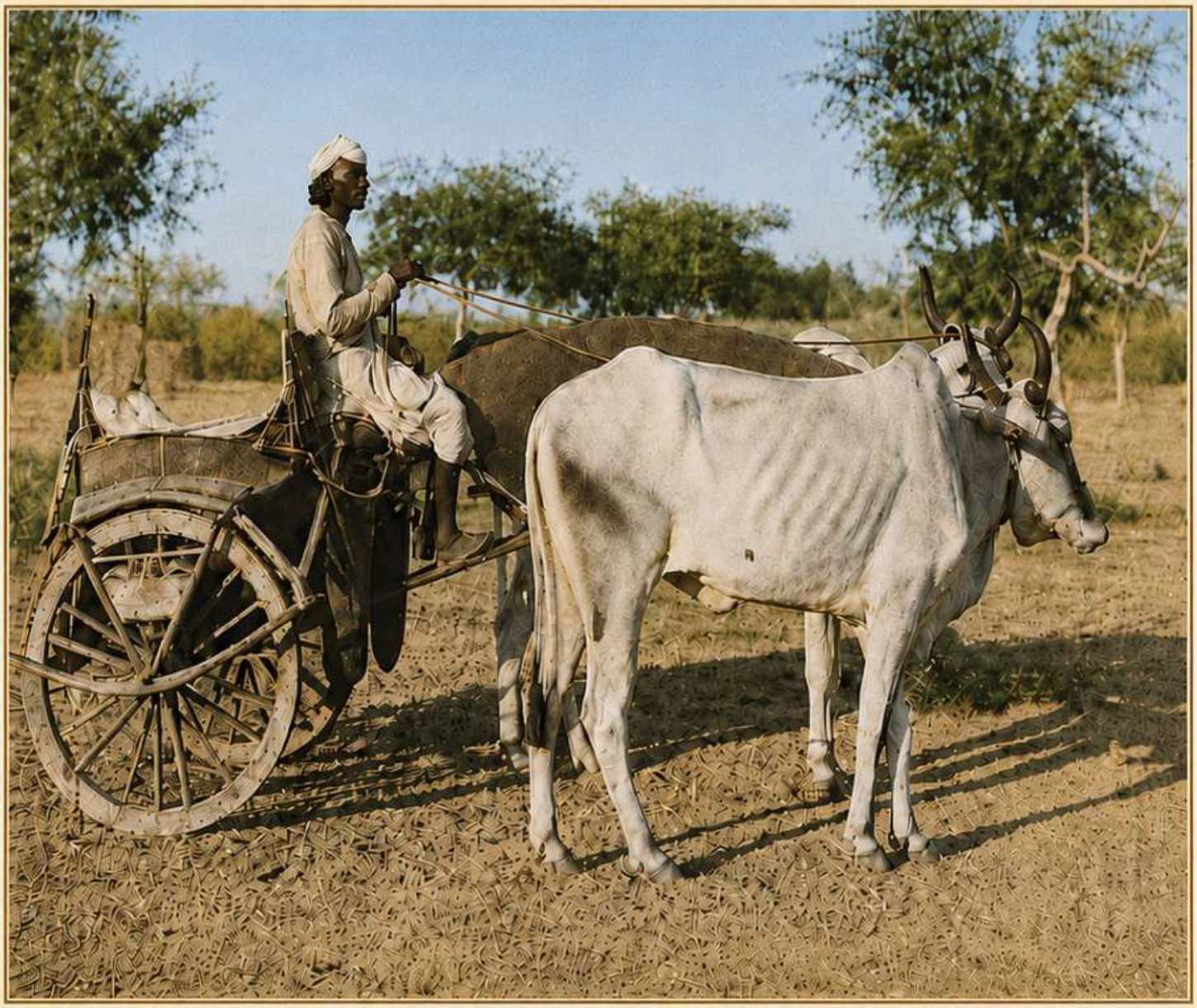

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

छायाचित्र: बीकानेर में लिया गया।

रोग और पसंदीदा रंग

रोग सामान्यतः अधिक नहीं बताए गए हैं। कभी-कभी रिंडरपेस्ट, खुरपका-मुँहपका और घातक गले का रोग का उल्लेख है। रंग धूसर या सफेद है; सफेद को प्राथमिकता दी जाती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 12 | पीडीएफ पृ. 21.

नागौरी माप लेने की पद्धति

रिपोर्ट में कुल ऊँचाई कुकुद के ठीक पीछे ली गई है। शरीर की लंबाई कंधे के बिंदु से पिछले भाग के बिंदु तक फीता को वक्र किए बिना; चेहरे की लंबाई सिर के ऊपरी पिछला भाग से थूथन के आरंभ तक; माथे की चौड़ाई नेत्र-कक्षीय अस्थि-उभार के ठीक ऊपर सबसे अधिक चौड़ाई पर; और छाती का घेरा कुकुद के ठीक पीछे लिया गया है। नीचे के सभी माप इंच में हैं।

स्रोत-संदर्भ: भूमिका, मूल मुद्रित भूमिका | पीडीएफ पृ. 5; नागौरी माप तालिका मूल मुद्रित पृ. 13 | पीडीएफ पृ. 22.

नागौरी गोवंश की मूल माप-तालिका

पशु	ऊँचाई	शरीर लंबाई	छाती घेरा	पिंडली घेरा	पिंडली लंबाई	सींग	चेहरा	माथा	आयु	रंग
बैल 17	67	66	81	9½	9	24	24	7	9	सफेद
बैल 18	58	64	78	8	6½	23	22	8½	9	सफेद
बैल 19	65	63	82	8¾	7¼	11	24	8	9	सफेद
बैल 42 समूह-1	57	62	72	8	7½	16½	21	6½	6	सफेद
बैल 42 समूह-2	59½	54	72	7½	7	19½	20½	7½	6	स्लेटी
बैल 42 समूह-3	57½	52	73	7¾	7¾	14	20	7½	5	सफेद
नागौर गाय 20	54½	53	72	7¼	7½	13½	22	7½	8	सफेद
नागौर गाय 21	53½	56	70	7	7	11	21	7	6	सफेद
नागौर बछिया 22	58½	62	75	7¾	7¾	5½	20½	7¾	3	लाल
नागौर गाय 43	51½	55	63	7	7½	11	19	7	6	सफेद
नागौर गाय 44	52½	55	66	7	—	9	18½	7	5	सफेद
नागौर गाय 46	48½	51	67	6½	6½	11	19	6	6	सफेद

नोट: गाय संख्या 44 की 'पिंडली की लंबाई' वाली प्रविष्टि मूल मूल प्रति में स्पष्ट अंक के रूप में पढ़ने योग्य नहीं है; इसलिए उसे अनुमान से नहीं भरा गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 13 | पीडीएफ पृ. 22.

बालोतरा-बाड़मेर और 'मारवाड़ गोवंश'

अगले भाग में बाल्ड्रे 'बालोतरा और बाड़मेर क्षेत्र — मारवाड़ गोवंश' शीर्षक देता है। बालोतरा के आसपास मालानी, सांचोर, सिवाना और धाट क्षेत्रों का उल्लेख है; बालोतरा पचपदरा इलाका में था। मिट्टी रेतीली, पानी प्रायः कम और खारा था। लूणी नदी के मार्ग के पास मध्यम गहराई के कुओं से मीठा पानी मिल जाता था, जबकि नदी से दूर क्षेत्र वर्षा-संग्रहित तालाब पर अधिक निर्भर थे।

1902 से पहले के 7 वर्षों के लगातार अकालों ने गोवंश को लगभग नष्ट कर दिया था; रिपोर्ट कहती है कि लगभग 5% ही बचे। कामकाजी गोवंश और गायें बाहर से लाई गईं, जिससे संकरण बढ़ी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14 | पीडीएफ पृ. 23.

मारवाड़ क्षेत्र का चारा, बांटा और बालोतरा मेला

बारिश और घास उपलब्ध होने पर गोवंश चराई से चलते थे। शाम को दूध देती गायें और कामकाजी बैल को 'बांटा' दिया जाता था—गेहूँ या जौ की भूसी, ग्वार, कपास-बीज और खल का मिश्रण। कपास-बीज को घी दूध-उत्पादन बढ़ाने और ग्वार को दूध की मात्रा बढ़ाने वाला माना जाता था; कामकाजी बैल को अपेक्षाकृत कम कपास-बीज और अधिक खल दिया जाता था।

सूखा में गोवंश को सिंध और गुजरात ले जाया जाता था। 1901 में अकाल इतना व्यापक था कि यह उपाय भी विफल रहा और लगभग 95% गोवंश भूख से मरे। बालोतरा में तालमारा/चैत्री नाम का बड़ा वार्षिक मेला अप्रैल या मई में लगता था, जिसमें सिंध, गुजरात, अजमेर और नागौर से लोग खरीद-बिक्री के लिए आते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14 | पीडीएफ पृ. 23.

नागौर में पालन से आकार और सक्रियता बढ़ने पर लेखक की टिप्पणी

बाल्ड्रे लिखता है कि नागौर के लोग इस नस्ल के अच्छे पारखी थे। वे अच्छे संभावनाशील बछड़े चुनकर नागौर ले जाते, पालते और फिर बैल बेचते। उसके अनुसार नागौर में पाले पशु दक्षिणी जोधपुर में पाले पशुओं से निश्चित रूप से बड़े और अधिक सक्रिय बनते थे।

वह इसका मुख्य कारण बेहतर आहार मानता है। नागौर की मिट्टी को अच्छे चारा के लिए अधिक उपयुक्त भी कहा जाता था, लेकिन लेखक स्वयं बेहतर आहार को अधिक निर्णायक कारण मानता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 15 | पीडीएफ पृ. 25.

बाड़मेर–बालोतरा की गायें, दूध और बछियाँ

बाड़मेर पशुपालक घी के लिए दूध-उत्पादन को नागौर पशुपालक से अधिक महत्व देते थे। इस कारण उनकी गायें सामान्यतः दुग्ध-गुणों में बेहतर और अधिक मूल्यवान थीं तथा आकार में भी नागौर की सामान्य गायों से बड़ी थीं। बाल्ड्रे इसे बछियाँ पर अधिक ध्यान दिए जाने से जोड़ता है; नागौर के लोग बालोतरा गाय खरीदने को तैयार रहते थे।

यहाँ प्रमुख रंग सफेद है और सामान्य वर्णन नागौरी जैसा ही है। बैल कुएँ, हल और गाड़ी में काम करते थे; भारी रेतीली सड़कों पर लगभग 20 मील प्रतिदिन चल सकते थे। गायों का दूध-उत्पादन 4–8 सेर बताया गया है। बछियों को नर बछड़ों की तुलना में अधिक समय और अधिक मात्रा में दूध दिया जाता था—जो रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश प्रजनन-क्षेत्र की प्रथा से उलटा था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 15 | पीडीएफ पृ. 25.

सूरज का सांड, प्रजनन-सांड अनुपात और मारवाड़ की कीमतें

हिंदू पशुपालक मृत्यु और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर अच्छे सांड मुक्त छोड़ते थे; ऐसे सांड पर गोल निशान दाग-चिह्न लगाया जाता और उन्हें 'सूरज का सांड'—'सूर्य का सांड'—कहा जाता था। अच्छे बछड़े चुनने में सावधानी रखी जाती थी। कभी-कभी मुस्लिम पशुपालक मिलकर अच्छा सांड खरीदते और उसका संयुक्त रूप से पालन करते थे।

यहाँ सांड और गायों का कोई निश्चित मानक नहीं था; पशुपालक लगभग 1 सांड प्रति 60 गायें को अच्छा मानते थे, लेकिन अभाव में 1 सांड प्रति 100 गायें स्वीकार करते थे।

श्रेणी	दर्ज कीमत
गाय	₹15–₹30
असाधारण गाय	₹60 तक
साधारण बैल	₹15–₹20 प्रति पशु
असाधारण तेज बैल	₹50–₹100
खराब वर्ष में दूर से खरीदी जोड़ी	₹200 तक

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 16 | पीडीएफ पृ. 26.

मारवाड़ में बधियाकरण, चारा और शुद्धता की कठिनाई

इस क्षेत्र के लोग अपने पाले बिना बधिया नर पशुओं को काम में लगाते थे और बधियाकरण के प्रति अनिच्छुक थे, हालांकि बधिया पशु खरीदते थे। मेलों में 'सांथिया' नामक बधियाकरण करने वाले उपलब्ध रहते थे और चाकू से की जाने वाली पद्धति वही था जिसका वर्णन नागौरी भाग में किया गया है।

बरसात में भूरत और सीवन घासें खूब उगती थीं। अभाव में लूसर्न और ग्वार दिया जाता था; लूसर्न पूरी तरह कुएँ की सिंचाई से उगती थी। बाजरी की बालियाँ उबालकर ग्वार और कपास-बीज के साथ मिलाकर दूध देती गायें और कामकाजी बैल को दी जाती थीं; बांटा भी दिया जाता था।

बाल्ड्रे लिखता है कि मारवाड़ में शुद्ध प्रजनन नागौर से कठिन थी क्योंकि प्रजनन-क्षेत्र सिंध और गुजरात की सीमाओं के पास थे, जहाँ गोवंश प्रजनन बहुत विस्तृत थी और नस्ल-मिश्रण की प्रवृत्ति अधिक थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 16 | पीडीएफ पृ. 26.

नागौरी और मारवाड़: लेखक का अंतिम मत

बाल्ड्रे स्पष्ट रूप से लिखता है कि नागौर गोवंश और तथाकथित मारवाड़ नस्ल के बीच किया गया भेद उसके विचार में 'नाम का भेद, वास्तविक अंतर नहीं' है। उसके अनुसार दोनों क्षेत्रों के बीच पशुओं का लगातार आदान-प्रदान होता था।

यदि नागौर के दक्षिणी जिलों में कुछ अंतर दिखाई देता है तो वह वाडियाल प्रकार के गुजरात से आसानी से आने के कारण हो सकता है। कर्नल पाउलेट के 'सांचोर नस्ल' को भी बाल्ड्रे वाडियाल प्रकार मानता है। मारवाड़ के देश का सामान्य वर्णन नागौर जैसा ही है, केवल बाड़मेर के पश्चिम में ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी बंजर क्षेत्र अतिरिक्त बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 16–17 | पीडीएफ पृ. 26, 28.

बाड़मेर गोवंश की मूल माप-तालिका

पशु	ऊँचाई	शरीर लंबाई	छाती घेरा	पिंडली घेरा	पिंडली लंबाई	सींग	चेहरा	माथा	आयु	रंग
मारवाड़ गाय 40	50	माप नहीं लिए जा सके								सफेद
मारवाड़ गाय 41 समूह-1	50	50½	68	6½	6½	13	18	6½	10	सफेद
मारवाड़ गाय 41 समूह-2	49½	58	64	6¾	7	7½	20	7	6	सफेद
मारवाड़ गाय 57	—	माप नहीं लिए जा सके								सफेद
मारवाड़ सांड 58	—	माप नहीं लिए जा सके								लाल
मारवाड़ बछड़ा 59	—	माप नहीं लिए जा सके								सफेद
मारवाड़ बैल 55	57	58	73	8½	7½	18½	22	8	7	सफेद
मारवाड़ बैल 56	56½	58	75	8	7	16	22	8	7	सफेद
मारवाड़ बैल समूह-3	56½	56	70	8	7	22½	20	7½	8	सफेद
मारवाड़ गाय 56	—	माप नहीं लिए जा सके								सफेद

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 18 | पीडीएफ पृ. 29.

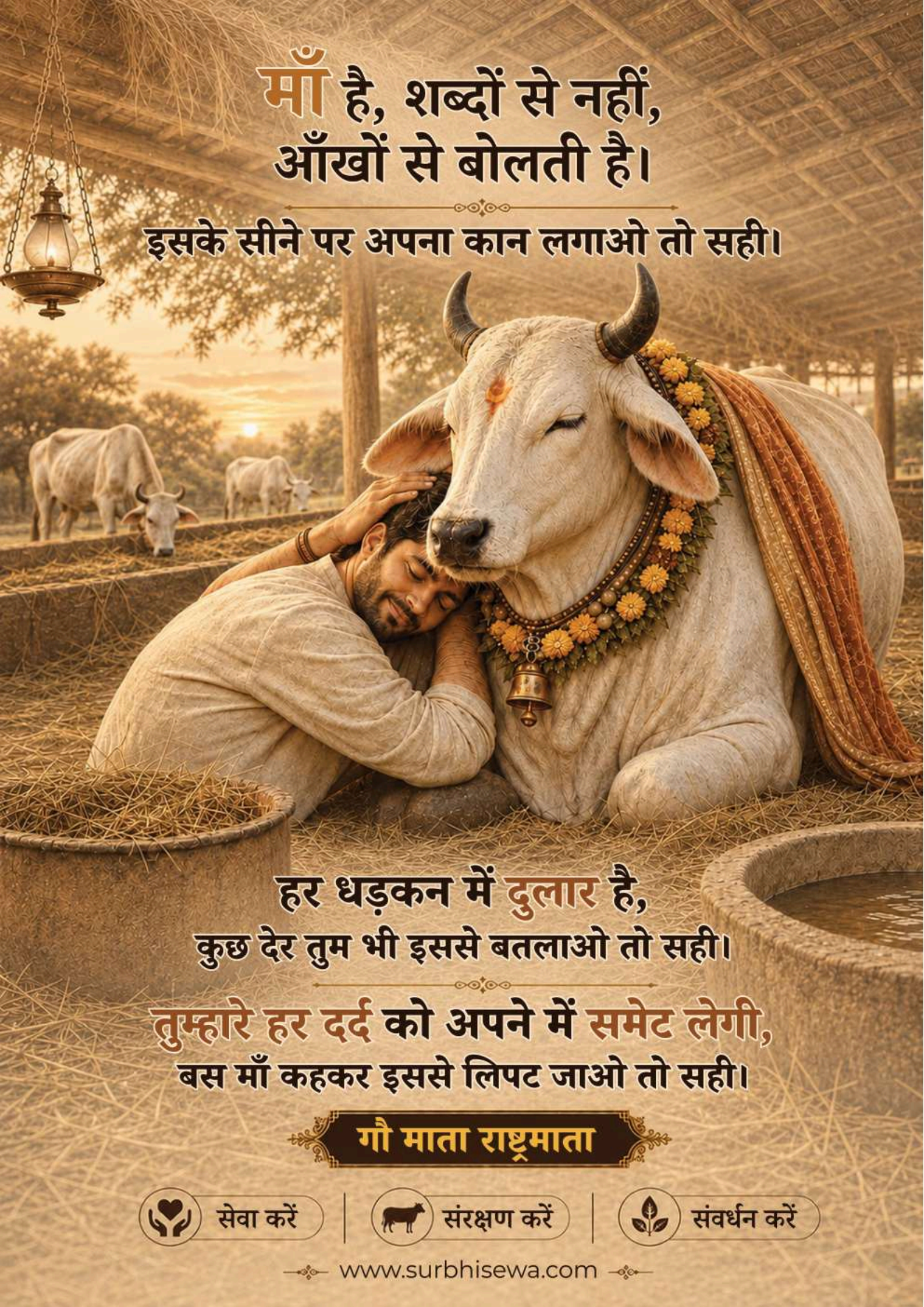
माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com